Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 2, February - 2025

DOIs:10.2018/SS/202502005 --:-- Research Paper / Article / Review

गद्दी जनजाति के पारंपरिक आभूषण: एक सांस्कृतिक अध्ययन

अतुल कुमार
शोधार्थी, जनजातीय अध्ययन केंद्र, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला
Email - kumaratul297@gmail.com

सारांश: हिमाचल प्रदेश की गद्दी जनजाति अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक जीवनशैली और विशिष्ट आभूषणों के लिए जानी जाती है। यह समुदाय मुख्य रूप से चंबा जिले के भरमौर क्षेत्र में निवास करता है जिसे "शिवभूमि" कहा जाता है। गद्दी जनजाति के पारंपरिक आभूषण न केवल सौंदर्य और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक हैं बल्कि उनका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी अत्यंत गहरा है।गद्दी महिलाएँ चाँदी और सोने से बने पारंपरिक आभूषणों को धारण करती हैं जिनमें सिर, कान, नाक, गले, हाथ, उँगलियों और पैरों के लिए विभिन्न प्रकार के गहने शामिल होते हैं। सिर के आभूषणों में चक, और बीनी चक प्रमुख हैं, जबकि कान के आभूषणों में झुमके, बुंदे और कांटे शामिल होते हैं। नाक के गहनों में बालू, फुल्ली और बेसर विशेष रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इसी प्रकार, गले के आभूषणों में चंदनहार, मालका रुपैया और कपूर की माला देखी जाती है जबकि हाथों और उँगलियों के लिए गोजरू, टोके और पारंपरिक अंगूठियाँ पहनी जाती हैं। गद्दी पुरुष भी आभूषणों से जुड़े होते हैं, जिनमें दूर (सोने की बालियाँ), चेन और चट्टा (रंगीन मोतियों वाला कमरबंद) प्रमुख रूप से पहने जाते हैं। पारंपरिक आभूषणों के निर्माण में स्थानीय सुनारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला को संजोए हुए हैं। हालाँकि, आधुनिकता के प्रभाव और बदलती जीवनशैली के कारण पारंपरिक आभूषणों का उपयोग अब केवल विशेष अवसरों तक सीमित रह गया है। यह शोध पत्र गद्दी जनजाति के पारंपरिक आभूषणों का सांस्कृतिक और सामाजिक अध्ययन प्रस्तुत करता है तथा इनके संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मूल शब्द: गद्दी जनजाति, हिमाचल प्रदेश, पारंपरिक आभूषण, सांस्कृतिक धरोहर, आभूषण निर्माण।

1.परिचय :

गद्दी जनजाति हिमाचल प्रदेश की एक महत्वपूर्ण जनजाति है जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और पारंपरिक जीवनशैली के लिए जानी जाती है (Handa, 1998, p. 265-278)। यह जनजाति विशेष रूप से चंबा जिले के भरमौर क्षेत्र में निवास करती है और अपनी विशिष्ट पारंपरिक परिधानों, आभूषणों और रीति-रिवाजों के लिए जानी जाती है (Negi, 1976, p. 32-43)। गद्दी समाज में आभूषण केवल सौंदर्य और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक नहीं हैं बल्कि यह उनकी सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक आस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं (Sharma & Sethi, 1997, p. 47-55)। गद्दी महिलाएँ और पुरुष विभिन्न प्रकार के पारंपरिक आभूषण धारण करते हैं, जिनका निर्माण चाँदी, सोने और अन्य धातुओं से किया जाता है। समय के साथ गद्दी समाज में आधुनिकता के प्रभाव से आभूषणों के स्वरूप और उपयोग में कुछ परिवर्तन अवश्य हुए हैं लेकिन उनकी सांस्कृतिक महत्ता आज भी बनी हुई है (Pandey, 2015, p. 32-43)।

गद्दी जनजाति में आभूषणों का उपयोग केवल सौंदर्य और आभूषण प्रियता तक सीमित नहीं है बल्कि इनका एक गहरा सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व भी है (Pandey, 2015, p. 32-43)। यह आभूषण पारिवारिक परंपराओं और सामाजिक संरचना का हिस्सा होते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किए जाते हैं। विवाह और अन्य शुभ अवसरों पर गहनों को उपहार स्वरूप देने की परंपरा इस जनजाति में आज भी प्रचलित है (Shashi, 1997, p. 62-66)। विवाह में नवविवाहित जोड़े को पारंपरिक आभूषण भेंट किए जाते हैं, जिससे पारिवारिक संबंधों की मजबूती और सामाजिक समरसता का संदेश मिलता है (Kapoor et al., 2008, p. 62-66)। गद्दी समाज में आभूषणों को आर्थिक स्थिरता और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक भी माना जाता है जिससे यह न केवल एक व्यक्तिगत अलंकरण का माध्यम बनता है बल्कि सामाजिक वर्गीकरण और पहचान का भी संकेत देता है (Himalayan Heritage, 2020)।

समय के साथ जैसे-जैसे गद्दी समुदाय के लोग मैदानी क्षेत्रों की ओर प्रवास करने लगे उनकी साक्षरता और आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ जिससे उनकी पारंपरिक जीवनशैली में भी परिवर्तन देखने को मिला है। हालाँकि आज भी वे अपने धार्मिक अनुष्ठानों और पारंपरिक समारोहों में अपने पारंपरिक आभूषण और वस्त्र पहनते हैं। गद्दी समुदाय की पारंपरिक वेशभूषा आकर्षक और विशिष्ट होती है। इनके पारंपरिक आभूषणों का भी विशेष महत्व है जो सोने और चाँदी जैसे धातुओं से बनाए जाते हैं और इनमें अक्सर अर्ध-कीमती पत्थरों को जड़ा जाता है या मीना कला द्वारा अलंकृत किया जाता है।

2. शोध पद्धति

इस शोध में गुणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है जिसमें गद्दी जनजाति के पारंपरिक आभूषणों का सांस्कृतिक अध्ययन किया गया है। डेटा संग्रहण के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में गद्दी समुदाय के सदस्यों के साक्षात्कार किए गए हैं साथ ही फोकस ग्रुप डिस्कशन के माध्यम से उनके पारंपरिक आभूषणों के सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक महत्व को समझने का प्रयास किया गया है। क्षेत्रीय अध्ययन किया गया है जिसमें भरमौर, कांगड़ा, धर्मशाला और अन्य गद्दी बहुल क्षेत्रों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में विभिन्न शोध पत्र, पुस्तकें और सरकारी रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है जिससे गद्दी जनजाति के आभूषणों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समझने में सहायता मिली है।

3. गद्दी महिलाओं के आभूषण

गद्दी महिलाएँ अपने आभूषणों को लेकर अत्यधिक सजग होती हैं। समुदाय में चाँदी को पवित्र माना जाता है, इसलिए अधिकांश पारंपरिक आभूषण चाँदी के ही होते हैं जिन पर मीना कार्य किया जाता है। मीना कार्य में आभूषणों के डिज़ाइन को विभिन्न रंगों से भरा जाता है जिससे वे अधिक आकर्षक लगते हैं। हालाँकि गद्दी समुदाय में नाक के आभूषण विशेष रूप से सोने के होते हैं क्योंकि नाक में चाँदी पहनना अशुभ माना जाता है। गद्दी महिलाओं में चाँदी के आभूषणों का अधिक प्रचलन देखा जाता है जबकि सोने के आभूषणों का उपयोग उनकी आर्थिक स्थिति और उपलब्धता पर निर्भर करता है। गद्दी आभूषणों की सबसे बड़ी विशेषता उनका विशिष्ट डिज़ाइन और प्रतीकात्मक चित्र होते हैं। ये आभूषण भारी और अद्वितीय शैली के होते हैं तथा गद्दी समाज में इन्हें पवित्र भी माना जाता है। पारंपरिक गद्दी आभूषणों में हार, कड़े, बाजूबंद, चूड़ियाँ, छल्ले, चंद्रहार, मूंगे की माला, तोड़ और चंद्रकला शामिल होते हैं। ये सभी गहने न केवल सौंदर्य को बढ़ाते हैं बल्कि इन्हें सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है। गद्दी समाज में नाक के आभूषणों का विशेष सामाजिक और धार्मिक महत्त्व होता है। यह धारणा है कि नाक में सोने के आभूषण पहनना शुभ होता है जबकि अन्य आभूषण चाँदी के होते हैं। गद्दी महिलाएँ नाक के दोनों ओर आभूषण पहनती हैं— एक ओर बालू और दूसरी ओर फुल्ली पहनी जाती है। छोटे आकार के नाक के आभूषण प्रायः सोने के ही होते हैं। विधवा गद्दी महिलाएँ नाक के आभूषण नहीं पहनती हैं क्योंकि इन्हें "सुहाग का प्रतीक" माना जाता है।

4. सिर और बालों के आभूषण

चक

चक विवाहित गद्दी महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला एक प्रमुख आभूषण है। यह शंकु आकार का चाँदी का आभूषण होता है जिसे सिर के शीर्ष पर पहना जाता है। यह दो समान आकार की चकड़ी नामक गोल संरचनाओं से जुड़ा होता है, जिन्हें सिर के पीछे दोनों ओर लगाया जाता है। यह विवाहित महिलाओं की पहचान का प्रतीक माना जाता है।

बीनी चक

बीनी चक एक गोलाकार आभूषण होता है जिसे चोटी पर बाँधा जाता है। इसे लगाने के लिए एक लूप और दो तारों का उपयोग किया जाता है। इसका वजन लगभग 50 ग्राम होता है। यह आभूषण गद्दी महिलाओं के बालों को संवारने और उनकी सुंदरता को बढ़ाने का कार्य करता है।

चिड़ी

चिड़ी बहुरंगी मीना कार्य और चाँदी के लटकते हुए मोती होते हैं। इसका वजन लगभग 140-150 ग्राम होता है और इसे माथे पर डोरी की सहायता से बाँधा जाता है। यह विशेष रूप से विवाहित महिलाओं द्वारा त्योहारों और समारोहों में पहना जाता है।

क्लिप

यह चाँदी की हेयर क्लिप होती हैं जो सिर के दोनों ओर बालों को सँवारने के लिए उपयोग की जाती हैं। इनका वजन लगभग 20-25 ग्राम होता है। इनका उपयोग बालों को सजाने और व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है।

5. नाक और कान के आभूषण

गद्दी समाज में नाक और कान के आभूषणों का विशेष धार्मिक और सामाजिक महत्व होता है। यह धारणा है कि नाक में सोने के आभूषण पहनना शुभ होता है जबकि अन्य आभूषण प्रायः चाँदी के होते हैं। गद्दी महिलाएँ नाक के दोनों ओर आभूषण पहनती हैं—एक ओर बालू और दूसरी ओर फुल्ली पहनी जाती है। छोटे आकार के नाक के आभूषण प्रायः सोने के ही होते हैं। विधवा गद्दी महिलाएँ नाक के आभूषण नहीं पहनती हैं क्योंकि इन्हें "सुहाग का प्रतीक" माना जाता है। पारंपरिक रूप से लॉन्ग, कोका, तिली और बालू नाक के आभूषणों में प्रमुख होते हैं।

फुल्ली

फुल्ली विवाहित महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला गोलाकार नथ है। यह सोने से बनी होती है और इसमें लाल रंग का पत्थर जड़ा होता है। इसका आकार छोटा होता है लेकिन यह अत्यधिक महत्वपूर्ण आभूषण माना जाता है। इसका वजन लगभग 3 ग्राम होता है और इसे नाक के दाएँ नथुने में पहना जाता है। फुल्ली विशेष रूप से शादीशुदा महिलाओं की पहचान का प्रतीक मानी जाती है।

वालू

वालू गद्दी महिलाओं की सबसे बड़ी और भव्य नथ होती है जिसे विशेष रूप से नवविवाहित महिलाएँ या दुल्हनें विवाह त्योहारों और अन्य शुभ अवसरों पर पहनती हैं। इसका व्यास लगभग 3-4 इंच होता है और यह सोने से बनी होती है। इसमें अर्ध-कीमती रत्न जड़े होते हैं और इसके साथ एक लंबी चेन जुड़ी होती है जिसे बालों में फँसाया जाता है। यह आभूषण बहुत भारी होता है और इसका वजन लगभग 150-200 ग्राम तक हो सकता है।

बेसर

बेसर छोटे आकार की नथ होती है जिसे नवविवाहित स्त्रियाँ पहनती हैं। इसका डिज़ाइन साधारण होता है और यह अक्सर सोने से बनी होती है। यह सुहाग का प्रतीक मानी जाती है और इसे विवाह के तुरंत बाद पहनना शुभ माना जाता है।

तिली

तिली नाक में पहना जाने वाला एक सूक्ष्म परंतु महत्वपूर्ण आभूषण होता है। यह दिखने में छोटा और हल्का होता है लेकिन इसे पारंपरिक रूप से सुहागिन महिलाओं के लिए शुभ माना जाता है।

झुमके

झुमके गद्दी महिलाओं के कानों में पहने जाने वाले पारंपरिक घुँघरूदार आभूषण होते हैं। ये विभिन्न आकार और डिज़ाइनों में आते हैं और सोने या चाँदी से बनाए जाते हैं। हर झुमके का वजन लगभग 15-20 ग्राम होता है। इन्हें विशेष रूप से शादी-विवाह और सांस्कृतिक अवसरों पर पहना जाता है।

गद्दी महिलाओं के नाक और कान के आभूषण उनकी सामाजिक स्थिति पारंपरिक मान्यताओं और धार्मिक विश्वासों से जुड़े होते हैं। सोने के नाक के आभूषण को शुभ और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है जबकि चाँदी के कान के आभूषणों का उपयोग सामान्य रूप से किया जाता है। पारंपरिक डिज़ाइन और कलाकारी इन आभूषणों को अद्वितीय और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण बनाते हैं।

6. गले के आभूषण

गद्दी महिलाओं में गले के आभूषणों का विशेष महत्त्व होता है। गले में पहने जाने वाले आभूषण प्रायः चाँदी से बने होते हैं और गाँव के स्थानीय सुनारों द्वारा तैयार किए जाते हैं। पारंपरिक डिज़ाइन अब भी प्रचलित हैं और कई आभूषणों का ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्त्व भी होता है। गद्दी महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले प्रमुख गले के आभूषण निम्नलिखित हैं:

चंदनहार /चंद्रहार

चंदनहार गद्दी समुदाय का एक प्रमुख और पारंपरिक गले का आभूषण है। यह भारी चाँदी का हार होता है जिसमें मीना कार्य और कई चेनें जुड़ी होती हैं। इसे विशेष रूप से शादी, मेलों और त्योहारों में पहना जाता है। इसका वजन 300 से 600 ग्राम तक हो सकता है। यह आभूषण न केवल महिलाओं द्वारा बल्कि विवाह के समय दूल्हे द्वारा भी पहना जाता है।

सिंगी

सिंगी हल्का और छोटे आकार का गले का आभूषण होता है। इसमें नलिकाकार चाँदी का पेंडेंट और सोने के मोतियों की हल्की लड़ी जुड़ी होती है। पहले इसका वजन अधिक हुआ करता था लेकिन अब इसे हल्का बनाकर 1 ग्राम तक कर दिया गया है। यह विवाह और धार्मिक अनुष्ठानों में पहना जाता है।

कपूर की माला

यह गद्दी समुदाय में धार्मिक आस्था से जुड़ी एक विशेष माला होती है। इसे मुख्य रूप से पूजा-पाठ, धार्मिक समारोहों और आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए पहना जाता है।

कंडू

कंडू एक सोने का हार होता है जिसका गद्दी महिलाओं के आभूषणों में विशेष स्थान है। यह अत्यधिक मूल्यवान और पारंपरिक आभूषण माना जाता है। इसका वजन लगभग 20 से 30 ग्राम तक होता है और इसे शुभ अवसरों पर पहना जाता है।

मालका रुपैया

यह हार पुराने चाँदी के सिक्कों से बना होता है जिन पर ब्रिटिश शासनकाल के क्वीन विक्टोरिया के चिन्ह अंकित होते हैं। इसे ऐतिहासिक और पारंपरिक आभूषणों में गिना जाता है। यह आभूषण गद्दी महिलाओं में काफी प्रसिद्ध है और इसे सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है।

चार आना और आठ आना हार

परम्परागत तौर पर कुछ गद्दी महिलाएँ केवल 4 आना और 8 आना के चाँदी के सिक्कों से बने हार पहनती हैं। इनसे कई प्रकार की धार्मिक और सामाजिक मान्यताएँ जुड़ी हुई हैं। यह हार गद्दी समुदाय की पारंपरिक धरोहर माने जाते हैं।

लाल, सफेद और हरे मोतियों की माला

यह गद्दी महिलाओं के गले का एक अन्य प्रमुख आभूषण है। इसे पारंपरिक रूप से विभिन्न अवसरों पर पहना जाता है और यह सुंदरता के साथ-साथ सांस्कृतिक पहचान का भी प्रतीक है।

लटकनी

लटकनी एक प्रकार की बालियों का सेट होता है जिसमें मोती या रत्न लटकते रहते हैं। इसे खासतौर पर त्योहारों और उत्सवों में पहना जाता है।

तुंगनी

तुंगनी एक पारंपरिक गद्दी आभूषण है जिसे कान के निचले हिस्से में पहना जाता है। यह चाँदी या सोने से बना होता है और इसमें जटिल नक्काशी देखने को मिलती है।

गद्दी महिलाओं के गले के आभूषण न केवल सौंदर्य और प्रतिष्ठा का प्रतीक हैं बल्कि उनका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। चंदनहार, कंडू, मालका रुपैया जैसे आभूषण परंपरा से जुड़े हुए हैं और इन्हें खासतौर पर शादी, मेले, त्योहार और धार्मिक अनुष्ठानों में पहना जाता है। चाँदी और सोने से बने ये आभूषण गद्दी समाज की विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं।

7 . हाथ और उँगलियों के आभूषण

गद्दी महिलाएँ अपने हाथों में विभिन्न प्रकार की चाँदी की चूड़ियाँ और कंगन पहनती हैं। विशेष रूप से मेलों, उत्सवों और धार्मिक अवसरों पर वे नए आभूषण खरीदने का अवसर नहीं छोड़तीं हैं । गद्दी समाज में हाथों के आभूषणों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व माना जाता है। गोजरू, टोके, सांगु, बंगन आदि पारंपरिक आभूषणों के अलावा वे उँगलियों में भी अंगूठियाँ पहनती हैं जिन्हें "मुंदरी" कहा जाता है।

गोजरू

गोजरू संकरे और हल्के चाँदी के कंगन होते हैं जिन्हें जोड़े में पहना जाता है। ये दिखने में पतले होते हैं लेकिन अपनी पारंपरिक और सांस्कृतिक विशेषता के कारण गद्दी महिलाओं के गहनों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनका वजन लगभग 100-120 ग्राम तक होता है।

टोके

टोके चौड़े और चपटे आकार के कंगन होते हैं जो गोजरू से अधिक भारी होते हैं। यह धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से विशेष महत्त्व रखते हैं। पारंपरिक रूप से इन्हें गोजरू के साथ पहना जाता है और इनका वजन लगभग 140-150 ग्राम तक हो सकता है।

सांगु

सांगु मोटे और मजबूत कंगन होते हैं जो चाँदी के बनाए जाते हैं। ये कंगन ग्रामीण क्षेत्रों में गद्दी महिलाओं के बीच विशेष रूप से लोकप्रिय हैं।

बंगन

बंगन भी गद्दी समाज में प्रचलित पारंपरिक कंगन होते हैं जो हाथों की शोभा बढ़ाने के साथ-साथ पारंपरिक गहनों का हिस्सा भी होते हैं। इन्हें विवाहित और अविवाहित दोनों तरह की महिलाएँ पहनती हैं।

नागबंद

नागबंद एक विशेष प्रकार का कंगन होता है जिसे सांप के आकार में बनाया जाता है। यह गद्दी समाज में विवाहित महिलाओं द्वारा विशेष रूप से पहना जाता है। यह कंगन धार्मिक आस्था से जुड़ा हुआ होता है और इसे पहनना शुभ माना जाता है।

अंगूठी/ मुंदरी

गद्दी महिलाएँ उँगलियों में विभिन्न प्रकार की चाँदी और सोने की अंगूठियाँ पहनती हैं। इनमें विशेष रूप से नाग वाली अंगूठी (जिसमें नाग की आकृति बनी होती है) अत्यधिक प्रचलित है। इसे धार्मिक आस्था और परंपरा से जोड़कर देखा जाता है। पारंपरिक डिज़ाइन वाली अन्य चाँदी और सोने की अंगूठियाँ भी गद्दी महिलाओं में प्रचलित हैं। इन अंगूठियों को विवाह, धार्मिक अनुष्ठानों और सांस्कृतिक आयोजनों के दौरान विशेष रूप से पहना जाता है।

गद्दी महिलाओं के हाथों और उँगलियों के आभूषण उनकी पारंपरिक धरोहर और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक होते हैं। गोजरू और टोके जैसे कंगन पारंपरिक रूप से शादीशुदा महिलाओं के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं, जबकि सांगु, बंगन और नागबंद जैसी चूड़ियाँ और कंगन धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं।

8 . पैरों के आभूषण

गद्दी समाज में पैरों के आभूषणों का भी विशेष महत्त्व होता है। गद्दी महिलाएँ पारंपरिक रूप से चाँदी की पायल, तोरे, पंजबे, झांझर और पैर की उँगलियों में फुल्लू जैसे आभूषण पहनती हैं। इन आभूषणों का धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्त्व होता है। कुछ गद्दी महिलाएँ टखनों और पैर की उँगलियों में चाँदी की अंगूठियाँ भी पहनती हैं।

पैरी

पैरी हल्की और सुंदर चाँदी की पायल होती है, जिसे नवविवाहित महिलाओं के लिए शुभ माना जाता है। चलते समय यह तेज़ आवाज़ करती है जिससे नई दुल्हन की उपस्थिति का संकेत मिलता है। इसकी चौड़ाई लगभग 5-10 सेमी होती है और इसका वजन 300-500 ग्राम तक हो सकता है। गद्दी समाज में इसे नवविवाहित महिलाओं की पहचान का प्रतीक माना जाता है।

पंजेबे

पंजेबे भारी चाँदी की पायल होती है जो आमतौर पर टखनों को सजाने के लिए पहनी जाती है। यह पारंपरिक रूप से गद्दी महिलाओं के आभूषणों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पंजेबों में जटिल डिजाइन और घुँघरू लगे होते हैं जिससे चलते समय मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है।

झांझर

झांझर विशेष प्रकार की पायल होती है जिसमें बड़े घुँघरू लगे होते हैं जो मधुर ध्वनि उत्पन्न करते हैं। इसे पारंपरिक नृत्य, शादी और अन्य सांस्कृतिक आयोजनों में पहना जाता है। गद्दी समुदाय में झांझर को महिलाओं के श्रृंगार का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

तोरे

तोरे, टखनों को सजाने वाले पारंपरिक आभूषण होते हैं। ये चाँदी के बने होते हैं और इनका डिज़ाइन सरल लेकिन आकर्षक होता है। गद्दी महिलाएँ विशेष अवसरों पर इन्हें पहनती हैं।

फुल्लू

फुल्लू पैर की उँगलियों में पहने जाने वाले चाँदी के छल्ले होते हैं। ये नवविवाहित महिलाओं के लिए अनिवार्य माने जाते हैं। फुल्लू न केवल सुहाग का प्रतीक होते हैं बल्कि इन्हें धार्मिक मान्यता के रूप में भी पहना जाता है।

गद्दी महिलाओं के पैरों के आभूषण उनकी पारंपरिक पहचान और सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न अंग हैं। पैरी ,पंजेबे , झांझर, तोरे और फुल्लू जैसे आभूषण न केवल पैरों की शोभा बढ़ाते हैं बल्कि धार्मिक और सामाजिक महत्व भी रखते हैं। नवविवाहित महिलाओं के लिए परी और फुल्लू जैसे आभूषण अनिवार्य माने जाते हैं जबकि पंजबे और झांझर जैसी पायलें पारंपरिक आयोजनों और उत्सवों में पहनी जाती हैं।

9 . गद्दी पुरुषों के आभूषण

गद्दी समाज में पुरुषों द्वारा भी पारंपरिक आभूषण धारण किए जाते हैं, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान और धार्मिक आस्था से जुड़े होते हैं। ये आभूषण विशेष रूप से विवाह, पर्व, उत्सव और लोकनृत्य के अवसरों पर पहने जाते हैं। गद्दी पुरुषों के आभूषणों में प्रमुख रूप से दुर , चेन , चंदनहार और चट्टा शामिल हैं।

दुर

दूर सोने की बालियाँ होती हैं जो पारंपरिक रूप से दूल्हे द्वारा विवाह के समय पहनी जाती हैं। यह गद्दी पुरुषों के पारंपरिक आभूषणों में से एक है और इसे शुभ माना जाता है।

चेन

चेन एक साधारण लेकिन महत्वपूर्ण आभूषण है जिसे गले में पहना जाता है। यह सोने या चाँदी से बनी होती है और इसे पुरुषों द्वारा दैनिक रूप से या विशेष अवसरों पर पहना जाता है। यह गद्दी समाज में प्रतिष्ठा और परंपरा का प्रतीक मानी जाती है।

चंदनहार/चंद्रहार

चंदनहार विवाह समारोहों में पुरुषों द्वारा पहना जाने वाला एक विशेष प्रकार का हार है। इसे केवल विवाह के समय पहना जाता है और यह पारंपरिक परिधान के साथ मेल खाता है। यह आभूषण गद्दी समुदाय के शादी-विवाह की परंपराओं से गहराई से जुड़ा हुआ

है।

चट्टा

चट्टा एक अनोखा और विशिष्ट आभूषण है जिसे गद्दी पुरुष विशेष रूप से लोक-नृत्य के दौरान कमर पर पहनते हैं। इसमें एक आईना और रंगीन मोती लटकते रहते हैं जो इसे आकर्षक बनाते हैं। यह गद्दी संस्कृति और पारंपरिक पोशाक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

गद्दी पुरुषों के आभूषण उनकी पारंपरिक पहचान और सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं। विवाह के समय दूर (सोने की बालियाँ) और चंदनहार / चंद्रहार जैसे आभूषण पहने जाते हैं जबकि चेन को रोज़ाना भी पहना जाता है। चट्टा पुरुषों के पारंपरिक लोकनृत्य का हिस्सा है और यह उनके सांस्कृतिक प्रदर्शन को और अधिक आकर्षक बनाता है। इन आभूषणों से गद्दी समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं और उनकी विशिष्ट पहचान का पता चलता है।

(तालिका **1.1)** गद्दी पुरुष और महिलाओं के पारंपरिक आभुषण

क्रमांक	**आभूषण का नाम**	**समूह**	**स्थान**	**सामग्री**	**भार (वजन)**
1	चक	महिला	सिर के पीछे	चाँदी	150-200 ग्राम
2	बीनी चक	महिला	चोटी पर	चाँदी	50 ग्राम
3	चिड़ी	महिला	माथे पर	चाँदी	140-150 ग्राम
4	टिका	महिला	मांग के ऊपर	सोना	3 ग्राम
5	क्लिप	महिला	बालों के लिए	चाँदी	20-25 ग्राम
6	नथ	महिला	नाक	सोने	10 से 15 ग्राम
7	फुल्ली	महिला	नाक में (सोना)	सोना	3 ग्राम
8	बालू	महिला	नाक में (सोना)	सोना	150-200 ग्राम
9	झुमके	महिला	कानों में	चाँदी या सोना	15-20 ग्राम
10	चंदरहार	महिला	गले में	चाँदी	300-600 ग्राम

क्रमांक	**आभूषण का नाम**	**समूह**	**स्थान**	**सामग्री**	**भार (वजन)**
11	सिंगी	महिला	गले में	चाँदी	25-30 ग्राम (अब 1 ग्राम)
12	कपूर कि माला	महिला	गले में	कपूर	अलग अलग
13	कंडू	महिला	गले में	चाँदी और मलका के रुपये	500 -700 ग्राम
14	गोजरू	महिला	कलाई में	चाँदी	100-120 ग्राम
15	टोके	महिला	कलाई में	चाँदी	140-150 ग्राम
16	नागबंध	महिला	कलाई में	चाँदी	100-120 ग्राम
17	पैरी	महिला	पैरों में	चाँदी	100-200 ग्राम
18	पंजबे	महिला	पैरों में	चाँदी	200 से 300
19	फुल्लू	महिला	पैरों की उँगलियों	चाँदी	अलग-अलग आकार
20	दुर	पुरुष	कानों में	सोना	5-10 ग्राम
21	चेन	पुरुष	गले में	सोना या चाँदी	10-20 ग्राम
22	नंती	पुरुष	कान	सोने	100-300
23	चंदरहार	पुरुष	गले में	चाँदी	300-600 ग्राम
24	चट्टा	पुरुष	कमर पर	चाँदी और काँच	अलग-अलग आकार

10 . निष्कर्ष:

गद्दी जनजाति में आभूषण केवल सौंदर्य का प्रतीक नहीं होते बल्कि वे उनकी धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन आभूषणों का निर्माण मुख्य रूप से स्थानीय सुनारों द्वारा किया जाता है जिससे यह समुदाय स्थानीय व्यवसाय और शिल्पकला को भी बढ़ावा देता है। परंपरागत रूप से गद्दी आभूषण भारी और विस्तृत डिज़ाइन के होते थे लेकिन आधुनिकता के प्रभाव और बदलती आवश्यकताओं के कारण अब हल्के और आधुनिक डिज़ाइन के आभूषणों की ओर रुझान बढ़ा है। (FGD, होली, 2024)।" गद्दी समाज में आभूषणों का महत्व केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि ये उनकी धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक परंपराओं से गहराई से जुड़े हुए हैं। नाक, कान, गले, हाथ, कमर और पैरों के पारंपरिक आभूषण न केवल गद्दी महिलाओं की पहचान को दर्शाते हैं, बल्कि यह उनके सामाजिक और वैवाहिक जीवन का भी एक अभिन्न हिस्सा हैं। (फील्ड अध्ययन, कुआरसी , 2024)।"गद्दी महिलाओं के आभूषणों का उल्लेख उनके लोकगीतों और सांस्कृतिक परंपराओं में भी देखने को मिलता है जैसे कि प्रसिद्ध लोकगीत –:

"तू तां चलू आ परदेश कुंजुआ, मिंजो देई जा गुन्ठी नाशाणी हो ।

गुन्ठी रा वसोस मत करें चंचलो, चम्बें सूना बतेरा हो, मेरिये जिंदे चम्बें सूना बतेरा हो"।।

एक अन्य लोकगीत है -:

'टिक टिक टोके घड़ी दियाँ वो सुनियारा, टोके रा रिवाज बड़ा आया हो",

यह दर्शाता है कि गद्दी अपने गहनों को लेकर गर्व और प्रेम महसूस करते हैं। समय के साथ गद्दी समाज के पहनावे और आभूषणों में बदलाव आया है। जहाँ पुरानी पीढ़ी अभी भी पारंपरिक आभूषणों को अपने दैनिक जीवन में पहनती है वहीं नई पीढ़ी इन्हें मुख्य रूप से विवाह, त्योहारों और मेलों में धारण करती है। आजकल विवाह तथा अन्य अवसरों पर पारंपरिक आभूषणों को पहनने की परंपरा फिर से लौट रही है (क्षेत्र अध्ययन,होली , 2024)। जैसे-जैसे गद्दी जनजाति आर्थिक समृद्धि की ओर बढ़ रही है, वैसे ही पुराने परंपरागत आभूषणों को पहनने का दौर भी फिर लौट आया है। आज गद्दी समाज में कुछ नए आभूषण भी जुड़ गए हैं, जैसे मंगलसूत्र और सोने के गले में पहनने वाले सेट, जिन्हें विवाह के दौरान विशेष रूप से धारण किया जाता है। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, कुआरसी , 2024)।

गद्दी युवा पीढ़ी अपने परंपरागत आभूषणों को पहनना गर्व की बात समझती है और अपने विवाह एवं अन्य समारोहों में इन्हें धारण करती है। गद्दी समाज में आभूषणों को उपहार में देने की परंपरा भी बहुत पुरानी और महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह न केवल पारिवारिक प्रेम और स्नेह को दर्शाता है बल्कि गद्दी संस्कृति में आभूषणों की स्थायी सामाजिक और धार्मिक महत्ता को भी बनाए रखता है। (FGD, होली, 2024)।" वर्तमान समय में काँगड़ा जिले के धर्मशाला, नगरी, विशेष रूप से भवारना , पपरोला, नगरोटा और चंबा जिले के होली और भरमौर में पारंपरिक आभूषणों का निर्माण किया जाता है। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, धर्मशाला, 2024)।"यह क्षेत्र गद्दी समाज की पारंपरिक आभूषण शिल्पकला के केंद्र के रूप में विकसित हो रहे हैं जहाँ परंपरागत डिज़ाइनों के साथ-साथ आधुनिक आभूषण भी बनाए जाते हैं। इन स्थानों के कारीगर अब भी पारंपरिक चाँदी के आभूषणों पर नक्काशी और मीना कार्य करके गद्दी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत बनाए हुए हैं।

संदर्भ :

1. Bhushan, S. (1995). A Study of the Tribes of Himachal Pradesh during the Colonial Period- A Historical Perspective. Ph.D. Thesis, Himachal Pradesh University. Retrieved from Shodhganga.
2. Handa, O. C. (1998). Textiles, Costumes and Ornaments of the Western Himalayas. Indus Publishing Company, New Delhi, pp. 265-278.
3. Handa, O. C. (2005). Gaddi Land in Chamba: Its History, Art & Culture - New Light on the Early Wooden Temples. Indus Publishing Company, New Delhi, pp. 28-43.
4. Himalayan Heritage - Gabdika. (2020). Gaddi Dresses and Ornaments. Retrieved from Gabdika Website.
5. Kapoor, A., Kanwar, P., & Sharma, N. (2008). Handicrafts Heritage of Gaddi Tribe of Himachal Pradesh. Indian Journal of Traditional Knowledge, 7(1), 62-66. Retrieved from NISCAIR Repository.
6. May 2009. Tribes of India: Gaddi Tribes of Himachal Pradesh. Retrieved from Tribes of India Blog.

7. Negi, T. S. (1976). Scheduled Tribes of Himachal Pradesh: A Profile. Indus Publishing, New Delhi.
8. Pandey, K. (2015). Beyond Visual Culture: A Study of Material Culture of a Transhumant Gaddi Tribe of North India. International Journal of Medical Research Professionals, 1(2), 32-43.
9. Sharma, K. P., & Sethi, S. M. (1997). Costumes and Ornaments of Chamba. Indus Publishing Company, New Delhi, pp. 47-55.
10. Shashi, S. S. (1997). The Gaddi Tribe of Himachal Pradesh: A Sociological Study. Indus Publishing, New Delhi.
11. Tribes and Tribal Culture of Himachal Pradesh. (December 2015). Retrieved from Him View Holiday.
12. शिव राज गद्दी समुदाय के वरिष्ठ सदस्य, भरमौर, व्यक्तिगत साक्षात्कार, 15 जनवरी 2024।
13. "गद्दी जनजाति में पारंपरिक आभूषणों की सामाजिक स्थिति", फोकस ग्रुप चर्चा (FGD), होली, चन्हौता, 10 मार्च 2024।
14. "गद्दी महिलाओं के आभूषणों का सांस्कृतिक महत्व", क्षेत्र अध्ययन, होली , जनवरी-फरवरी 2024।
15. विजय कुमार गद्दी समुदाय के वरिष्ठ सदस्य, कुआरसी , व्यक्तिगत साक्षात्कार, 15 जनवरी 2024।